

# डॉ. केनेथ मैथ्यूजः उत्पत्तिः सत्रः याकूब का आशीर्वादः यूसुफ के पुत्रः और याकूब और यूसुफ की मृत्युः उत्पत्तिः

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टैड हलिडेब्रांटे

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज हैं जो उत्पत्ति की पुस्तक पर अपनी शक्ति दे रहे हैं। यह सत्र 25 है, याकूब का आशीर्वाद, यूसुफ के बेटे और याकूब और यूसुफ की मृत्यु, उत्पत्ति 48-50।

आज पाठ 25 है, याकूब का आशीर्वाद और याकूब का दफनाया जाना और फरि यूसुफ का प्रत्याशति दफनाया जाना, अध्याय 48 से 50 तक।

तो, ये तीन अध्याय अब पूरी कतिब को उसके भव्य नषिकर्ष पर ले जाते हैं। पछिली बार मैंने बताया था कि कैसे अध्याय 46 और 47 अध्याय 48, 49 और 50 के साथ मलि जाते हैं। हमारे पास दो नषिकर्ष हैं, 46 और 47, जो यूसुफ की कहानी का नषिकर्ष है।

फरि हमारे पास 48, 49 और 50 हैं, आज की हमारी चर्चा, जसिमें यूसुफ और फरि याकूब का जकिर है। इन दो प्रमुख पात्रों को पूरी कतिब के नषिकर्ष में मलि दिया गया है। और यह इसलिए संभव है क्योंकि यूसुफ की कहानी में याकूब एक बहुत ही महत्वपूर्ण पात्र है।

बेशक, जैसा कि हम 48 से 50 में देखते हैं, उनकी अपनी कहानी में भी उनका स्थान प्रमुख है। जब आप दोनों कहानियों को एक साथ देखते हैं, तो ये तीनों पात्र कहानी के प्रमुख पात्र हैं। उनके पास यूसुफ और याकूब होंगे, और शेष बेटों में से, यहूदा, विशेष रूप से प्रमुखता प्राप्त करता है।

तो, हम पाते हैं कि पुस्तक की व्याख्या और समझ के तरीके के लिए यह एक उचित नषिकर्ष है। और वह है, जैसा कि हमने अध्याय एक में देखा, अपनी सृष्टि के लिए परमेश्वर के अच्छे उद्देश्य। और इसलिए, हमने पाया कि इस्राएल का परमेश्वर सृष्टि का परमेश्वर है, और आशीर्वाद का परमेश्वर भी है।

मानव परिवार को आशीर्वाद देने पर जोर अध्याय एक, श्लोक 26 से 28 में पाया जाता है। और हमने सीखा कि परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं को अपनी छवि में बनाया, जसिका अर्थ है कि उसने पुरुषों और महिलाओं को व्यक्तियों के रूप में बनाया। और यह उन्हें परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध बनाने में सक्षम बनाता है क्योंकि परमेश्वर भी व्यक्तिगत है।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, वह बहुत ही व्यक्तिगत है। अपने स्वभाव और चरित्र के कारण, वह सृष्टि व्यवस्था के साथ संबंध बनाने के लिए उत्सुक है, खास तौर पर मानव परिवार के साथ व्यक्तिगत संबंध। और इसलिए, वह मानव परिवार के लिए आशीर्वाद की योजना बनाता है।

जैसा कि हमने अध्याय एक के श्लोक 26 से 28 में देखा, मानव परिवार के लिए इस रश्ते को बनाए रखना एक आशीर्वाद है। हम सरिफ़ आशीर्वाद शब्द का इसतेमाल कर सकते हैं। संतान पैदा करना का मतलब है गुणा करना और फरि पूरी सृष्टि पर अधिकार जताना।

चूँकि इस सृष्टि का ध्यान भूमि पर है, पृथ्वी पर, परमेश्वर के शासन का स्थलीय कषेत्र मानव परिवार के माध्यम से व्यक्त होता है, इसलिए हम इसे भूमि कह सकते हैं। फरि ये तीन तत्व अब्राहम से कए गए वादों में नए सरि से व्यक्त कए गए हैं। इन वादों को सुनने के पहले अवसर पर, अध्याय 12, आयत एक से तीन में, जहाँ परमेश्वर अब्राहम से कहता है, तुम मेरे साथ एक रश्ते से धन्य हो जाओगे।

और फरि तुम्हारे पास ज़मीन होगी, और तुम्हारे पास बहुत से वंशजों के साथ एक शक्तशाली राष्ट्र होगा। हम उत्पत्त के आख्यानो में परमेश्वर के वचनबद्ध आशीर्वाद के इस वषिय को देखते हैं। जब हम इन अध्यायों को देखते हैं, तो आज का अंश आपको उत्पत्त के वषिय के इन तीन तत्वों की याद दिलाएगा।

और इस मामले में, यह पूरे पंचग्रन्थ, उत्पत्त, व्यवस्थाविरण के माध्यम से सभी का वषिय होगा। इसलिए, जब यह नषिकर्ष आता है, तो मैं हमें आगे याद दिलाता चाहता हूँ कि हम जानते हैं कि जब परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की, तो उसने एक अधिकारिक शब्द के साथ अपनी रचना के माध्यम से खुद को व्यक्त किया। और फरि इसके लिए प्रेरणा, हम पवित्रशास्त्र के बड़े स्वर पर समझते हैं, कि परमेश्वर ने बनाया, कि परमेश्वर ने मानवता बनाई, कि परमेश्वर इस रश्ते के लिए उत्साही था और एक रश्ता सुनिश्चित करने के लिए तैयार था।

उसने ऐसा प्रेम के कारण किया। और जब इस्राएल राष्ट्र की बात आती है, तो इस्राएली लोग पेटाट्यूक पढ़ते हैं, वे इस बात पर वचार करते हैं कि कैसे सैनाई में खुद को प्रकट करने वाले परमेश्वर ने उन्हें मसिर से छुड़ाए गए लोगों के बारे में बताया, जिन्हें रेगसितान से सफलतापूर्वक निकाला गया था, और फरि वह पीढ़ी जो देश में प्रवेश करने की कगार पर खड़ी थी, उसने मूसा को व्यवस्थाविरण की पुस्तक में अपने अंतिम निदेश देते हुए सुना। यही हम व्यवस्थाविरण अध्याय 7 में पाते हैं। जब हम इस अंश को देखते हैं, तो मैं आपको ध्यान से सुनने या उस अंश को देखने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ क्योंकि यह व्यक्त करता है कि परमेश्वर ने इस्राएल को क्यों चुना और क्यों परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब को चुना, जिसके बारे में हम पढ़ रहे हैं।

इसलिए, यदि आप अध्याय 7 को देखेंगे, तो हम श्लोक 7 को पढ़ेंगे। इसमें लिखा है, "परभु ने तुम पर अपना सनेह नहीं रखा और तुम्हें इसलिए नहीं चुना क्योंकि तुम अन्य लोगों की तुलना में अधिक संख्या में थे, बल्कि तुम सभी लोगों में सबसे कम थे।" दूसरे शब्दों में, इस्राएल को इसलिए नहीं चुना गया क्योंकि वह परमेश्वर के लिए अधिक आकर्षक था या उसके विशेष ध्यान के योग्य था।

लेकिन वह पद 8 में आगे कहता है, "लेकिन मूसा कहता है, यहोवा ने तुमसे प्रेम किया और तुम्हारे पूर्वजों से की गई शपथ को पूरा किया, इसलिए उसने तुम्हें शक्तशाली हाथ से बाहर निकाला और गुलामी की भूमा से, मसिर के राजा फरौन की शक्ति से तुम्हें छुड़ाया। इसलिए, जान लो कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है। वह वशिवासयोग्य परमेश्वर है।

फरि श्लोक 12 पर चलते हैं। यदि आप सनाई में परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए इन नयियों पर ध्यान देते हैं और उनका पालन करने में सावधान रहते हैं, तो आपका परमेश्वर यही आपका साथ अपने प्रेम की वाचा को बनाए रखेगा। जैसा कि उसने आपके पूर्वजों से शपथ खाई थी, वह आपसे प्रेम करेगा, आपको आशीर्वाद देगा, और आपकी संख्या बढ़ाएगा।

तो, यह इस बात की याद दिलाएगा कि कैसे परमेश्वर इस्राएल के प्रति अपने प्रेम और आशीर्वाद के माध्यम से मानव परिवार के लिए अपना आशीर्वाद व्यक्त कर रहा है। विशेष रूप से, उस प्रेम के कारण जो परमेश्वर को पूर्वजों से था। और यह याद रखना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने अपने चुनिंदा प्रेम से इस विशेष परिवार को चुना ताकि इस परिवार के माध्यम से, इस उभरते हुए राष्ट्र के माध्यम से, सभी राष्ट्रों, सभी लोगों तक पहुंच सके।

और कैसे इस उद्देश्य और समावेश की योजना को कई बाधाओं का सामना करना पड़ा। लेकिन परमेश्वर ने अपनी दया और कृपा में, इस्राएल के भीतर, स्वयं पतिओं के भीतर, उनके अनैतिकता और अवज्ञा के कारणों को होने नहीं दिया। और कभी-कभी, उनके विश्वासघात या पतिओं और इस्राएल के बाहर से आने वाली धमकियों को भी होने नहीं दिया।

जैसे किरिष्टर या सरिफ़ सैन्य आयाम ही नहीं बल्कि किरिष्टरों की अनैतिकता और दुष्टता भी। परमेश्वर ने अपने चुने हुए प्रेम की शक्त से, भीतर या बाहर, इन प्रकार के खतरों पर वजिय प्राप्त की। कुछ मामलों में, बल्कि किड़े सुधार की आवश्यकता थी।

यह सब प्रभु और लोगों के बीच के रिश्ते को बनाए रखने के लिए किया गया था। ताकि उसके पास एक लोग हों, एक पवित्र लोग, याजकों का एक राष्ट्र, हमें नरिगमन अध्याय 19 में बताया गया है, ठीक वैसे ही जैसे वे नरिगमन 20 में दस आज्ञाएँ प्राप्त करने के लिए सनाई परवत की तलहटी में थे।

तो फरि इस तरह से, वह पूरी दुनिया के लिए यह महान उद्धार लाएगा। और यह यूसुफ़ की कहानी में परलिकषति होता है। जैसा कि आपको याद होगा, अध्याय 45, 46 और 47 में हमें बार-बार बताया गया था।

यूसुफ़ ही वह माध्यम था जिसके द्वारा परमेश्वर याकूब के परिवार को इस भयंकर अकाल से बचाएगा। बाइबल हमें बताती है कि यह इतना बड़ा और इतना भयंकर था। और साथ ही, वह उन सभी लोगों का उद्धारकर्ता होगा जो प्राचीन नकिट पूर्व से मसिर आए थे।

और फरि जीवति रहने के लिए आवश्यक अनाज के प्राप्तकर्ता कौन थे? अब, जब हम अध्याय 48 और 49 से लेकर श्लोक 28 तक जो पाते हैं, उसे उठाते हैं। हम इसे याकूब की आशीष कह सकते हैं।

और इसलिए, हम जिस आशीर्वाद की बात कर रहे हैं, वह यूसुफ़ के दो बेटों का आशीर्वाद होगा, जो मसिर में उसके द्वारा पैदा हुए थे। आपको याद होगा कि फिरिन ने उसे एक मसिरी पत्नी दी थी। उसके दो बच्चे थे।

इसका वर्णन अध्याय 41, श्लोक 50 से 52 में किया गया है। दो बेटे मनश्शे और एप्रैम थे। और फरि हम पाएंगे कि अध्याय 49 श्लोक 1 से 28 में उसके 12 बेटों के लिए आशीर्वाद है।

इस कथा में ये दो आशीर्ष ध्यान में रखी जाएंगी। आइए इसे याकूब से शुरू करें, जो अध्याय 48 में यूसुफ के दो बेटों को आशीर्वाद देता है। अब, यूसुफ पहचानता है कि यह याकूब के दोनों के अंत में है।

परंपरा के अनुसार, परिवार का मुखिया बेटों को आशीर्वाद देता था। और इसलिए यूसुफ, हालांकि वह आशीर्वाद पाने वाला था, आशीर्वाद चाहता था। वह चाहता था कि उसके दोनों बेटे याकूब के 12 बेटों में गनि जाएँ।

किपरमेश्वर ने याकूब से जो वादे किए थे, वे आशीर्वाद उसके दो बेटों को भी मलिंगे। और आप इस बात को लेकर उसकी चिंता का अंदाजा लगा सकते हैं, क्योंकि ये दोनों बेटे याकूब के पोते हैं। वास्तव में उसके तत्काल वंशज नहीं हैं।

ये दोनों भी याकूब को नहीं जानते थे। और फरि, बेशक, उनकी माँ मसिरी थी और नसिसंदेह मसिर के रीत-रिवाजों के अनुसार कपड़े पहनती और रहती थी। इसलिए, परिणामस्वरूप, यूसुफ अपने पति के पास गया और अपने दो बेटों मनश्शे और एप्रैम के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की।

और इसलिए, हम सुनते हैं कि जब यूसुफ अपने पति के पास गया, तो याकूब ने पद 3 में यूसुफ से कहा, सर्वशक्तिमान ईश्वर, और इसलिए हम यहाँ उस ईश्वर का संदर्भ देते हैं जो प्रकट हुआ। अब यह वही ईश्वर है जिसने खुद को प्रकट किया, आपको याद होगा, अध्याय 28 में रात के दर्शन के अवसर पर, जब याकूब अपने जन्म की भूमि को छोड़कर पददन अराम की ओर जा रहा था, अपने जुड़वा भाई एसावि के प्रतदिवेष के कारण डर के मारे भाग रहा था। और पद 3 में, वह उस पुराने नाम को बताता है जिसे बेथेल के नाम से जाना जाता है।

यह लूज है। वह कनान देश के लूज में मेरे सामने प्रकट हुआ, और वहाँ उसने मुझे आशीर्वाद दिया। अब, हमारे पास वास्तव में वचनबद्ध आशीर्वाद के तीन तत्व हैं।

इसलिए, उसने मुझे आशीर्वाद दिया और मुझसे कहा, मैं तुम्हें फलवन्त बनाऊँगा और तुम्हारी संख्या बढ़ाऊँगा। और मैं तुम्हें लोगों का एक समुदाय बनाऊँगा। तो, यह याकूब की संतान होगी, और नश्चिंति रूप से, वह कई लोगों का समुदाय बन गया क्योंकि वह बारह बेटों का पति बन गया।

और फरि मैं तुम्हें यह देश तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों को सदा के लिए दे दूँगा। अब, वह सब कुछ जो याकूब को बहुत पहले याद था जब वह देश से भाग गया था। अब, वह अब उस देश में नहीं है।

वह पददन अराम भाग गया और अंततः उस देश में वापस आ गया, और अब यहाँ यह भयंकर अकाल है, और उसे भविष्य को सुरक्षित करने के लिए, इस अकाल के बीच सुरक्षा को सुरक्षित करने के लिए देश छोड़ना पड़ा। इसलिए, वह देश में नहीं है, लेकिन उसके मन में है, और उत्पत्ती की पुस्तक के अनुसार यह सही भी है, कि यद्यपि वह देश में नहीं है, फरि भी परमेश्वर

याकूब के परिवार को उस देश में पुनःस्थापित करने जा रहा था, कविह परमेश्वर की शाश्वत, चरिस्थायी प्रतजिजाओं का हसिसा था। इसलिए, हम जो खोजते हैं वह अब्राहम के वंशजों से कए गए वादों के संदर्भ में यूसुफ के दो बेटों का संदर्भ है।

ठीक है, अब महत्वपूर्ण बात यह है कविह एप्रैम और मनशशे को अपनाता है, और वास्तव में, इस पर चर्चा का वसितार श्लोक 1 से 12 में गना जाएगा। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कविह श्लोक 5 में कहता है कवि ये दोनों मसिर में पैदा हुए थे। मेरे यहाँ आने से पहले, ये दोनों मेरे ही माने जाएंगे।

देखिए, यह गोद लेने की भाषा है। उनका दर्जा यूसुफ जैसा ही होगा, और वह याकूब का वंशज होगा जसि आशीरवाद मलिंगा और वचनबद्ध आशीरवाद प्राप्त होगा। और वह उनकी तुलना अपने पहले दो बेटों से करता है, रूबेन और शमिोन मेरे हैं।

और इसलिए, एप्रैम और मनशशे के अलावा कोई भी अतिरिक्त संतान तुम्हारी होगी, यूसुफ, लेकिन ये दोनों मेरे हैं। उनका भी उतना ही महत्वपूर्ण दर्जा है। और फरि श्लोक 7 में, जब मैं पदान से अपने दुख की ओर लौट रहा था, राहेल कनान देश में मर गई।

अब, यह अध्याय 35, श्लोक 16 से 19 में है, और वह राहेल की मृत्यु का वर्णन करता है। अब, राहेल का संदर्भ क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि यूसुफ राहेल से पैदा हुआ था। इसलिए, वह इस ध्यान में लाता है।

अब, पद 8 में हम याकूब को उसके वैकल्पिक नाम, इस्राएल के रूप में संदर्भित करते हैं। और याद रखें कवि उसका नाम यहोवा के दूत, अर्थात् स्वयं यहोवा ने, अध्याय 32 में रखा था, जहाँ उसने यहोवा के दूत के साथ कुशती लड़ी और नया नाम, इस्राएल प्राप्त किया। और इस्राएल का अर्थ है परमेश्वर प्रयास करता है।

और इसलिए, दोनों के बीच कुशती हुई, और याकूब को प्रभु का आशीरवाद मिला, और उसका प्रभु से व्यक्तित्व मलिन हुआ। और इसलिए, शायद, मुझे लगता है, इस प्रवचन के खंड में इतनी बार इस्राएल का उल्लेख करने का उद्देश्य, पद 8 से पद 12 तक, यह जोर देना होगा कवि हम गोद लेने पर पाते हैं, और ये दोनों, एप्रैम और मनशशे भी, इस्राएल का हसिसा हैं। और चूंकि याकूब, वास्तव में, इस्राएल है, जैसा याकूब जाता है, वैसा ही इस्राएल भी जाएगा, यह इन दोनों की स्थिति के बारे में पाठक को आश्वस्त करता है।

तो, यह पद 8 में शुरू होता है, इस्राएल, और फरि, पद 9 में, इस्राएल ने कहा, और फरि पद 10 में, इस्राएल की आँखें, पद 11 में, इस्राएल ने यूसुफ से कहा, पद 12 में, इस्राएल के घुटने। अब, यह आश्चर्यजनक है कवि इस्राएल की आँखों के कमजोर होने, अंधे होने पर यह नाटक है, यानी याकूब की आँखें। और इसलिए, इसीलिए वह, सुदृढीकरण के लिए, कहता है, ये कौन हैं? और यहाँ थोड़ी वडिंबना है, क्या आपको नहीं लगता, कवि भले ही इस्राएल की आँखें कमजोर हो रही थीं, पद 10 में, उसके पास आध्यात्मिक अंतरदृष्टि थी, और यह आध्यात्मिक अंतरदृष्टि थी जसिने उसकी कमजोर होती आँखों पर वरीयता ली।

इसमें भी, याकूब और एसाव के मामले की प्रतधिवन अंतरनहिति है कयोंक आपको याद होगा क यिकूब ने अपने बूढ़े और अंध पति इसहाक से आशीरवाद पाने के लिए छल किया था। लेकिन यहाँ कोई छल नहीं है। याकूब और यूसुफ एक दूसरे से खुलकर और सच्चाई से बात कर रहे हैं।

इसलिए, श्लोक 12 में, हम उस प्रथा का संदर्भ पाते हैं जो हमें श्लोक 12 में मिलती है, इस मामले में, हमारे पास घुटने हैं, जो जांघों और कमर के बराबर होंगे। और यह, जाहरि है, जन्म का संदर्भ होगा, जन्म के लिए एक अलंकार। वास्तव में, जब आप अध्याय 24 को देखते हैं, तो याद रखें कि अब्राहम ने अपने सेवक को इसहाक के लिए एक पत्नी की तलाश करने के लिए भेजा था।

और वह रबिका को वापस ले आया। लेकिन ऐसा करते समय, अब्राहम ने नौकर को अपना हाथ उसकी जांघ पर रखने और शपथ लेने के लिए कहा। अब, आयत 13 से 20 में, इस गोद लेने के बाद, याकूब एप्रैम और मनशशे को आशीरवाद देता है।

तो, यहाँ जो काम चल रहा है वह यह है कि यूसुफ ने अपने सबसे बड़े बेटे को आशीरवाद दिलाने में बहुत नविश किया है, जो कि फरि से, प्रथागत रहा होगा। और जैसा कि हम उत्पत्तिका पुस्तक में बार-बार गाते हैं, भाई-बहनों में से छोटे भाई को बड़े भाई से पहले स्थान दिया जाता है। और यह एसाव और याकूब के साथ खुद हुआ, अध्याय 25 में जन्म कथा के अनुसार, कैसे याकूब एसाव की जगह लेगा।

जैकूब की कहानी में भी यही हुआ। तो, इस मामले में, हम पाते हैं कि यूसुफ ने उन्हें, पद 13 में, एप्रैम को अपने दाहिने हाथ पर इस्राएल के बाएँ हाथ की ओर और फरि मनशशे को अपने बाएँ हाथ पर इस्राएल के दाहिने हाथ की ओर रखा। तो, आप कल्पना कर सकते हैं कि यहाँ मनशशे को जैकूब के दाहिने हाथ के साथ रखा गया है।

उसे आशीरवाद देने के लिए यह आसान और संतुलित, संतुलित स्थिति होगी। यूसुफ ने अपना हाथ यहाँ रखा, और फरि एप्रैम ने इस तरफ, यूसुफ के दाहिने तरफ। और इस तरह, वह उसे दूसरा छोटा आशीरवाद देगा।

खैर, हुआ यह कि याकूब ने अपने हाथों को क्रॉस किया। और श्लोक 14 में कहा गया है, लेकिन इस्राएल ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर एप्रैम के सरि पर रख दिया, हालाँकि वह छोटा था। अपनी बाहों को क्रॉस करते हुए, उसने अपना बायाँ हाथ मनशशे के सरि पर रखा, हालाँकि मनशशे ज्येष्ठ था।

और फरि उसने यूसुफ को आशीरवाद दिया, लेकिन यह वास्तव में यूसुफ के बेटों को आशीरवाद देने के बराबर है। और कई बार, आप पूरे पेटाटेच और भविष्यवक्ताओं में यूसुफ को उसके बेटों, मनशशे और एप्रैम के वकिलपु के रूप में संदर्भित पाएंगे। उदाहरण के लिए, जब भूमि के वितरण के समय की बात आती है, जैसा कि हम यहोशू की पुस्तक में पाते हैं, तो दो बेटों का संदर्भ दिया गया है जो यूसुफ के प्रतनिधि हैं।

और इसलिए, हम इस आशीर्वाद को पाते हैं जो पद 15 और 16 में होता है। अब, यूसुफ अपने पति को सुधारने का प्रयास करता है, लेकिन इसहाक ऐसा नहीं करेगा, कष्टमा करे, याकूब ऐसा नहीं करेगा। पद 19 में कहा गया है, लेकिन उसके पति ने मना कर दिया।

इसलिए, यूसुफ अपने हाथों को खोलना चाहता था, लेकिन उसके पति ने मना कर दिया और कहा, मैं अपने बेटे को जानता हूँ, मैं जानता हूँ। वह सब कुछ अच्छी तरह से जानता है, अनुभव से और अन्यथा। वह भी, यानी मनश्शे, जो ज्येष्ठ पुत्र है, महान बनेगा।

फरि भी, उसका छोटा भाई उससे भी बड़ा होगा, और उसके वंशज राष्ट्रों का समूह बनेंगे। इसलिए, उसने उस दिन उन्हें आशीर्वाद दिया, और उसने कहा, तुम्हारे नाम पर इस्राएल यह आशीर्वाद देगा। परमेश्वर तुम्हें एप्रैम और मनश्शे के समान बनाए।

जाहरि है कि यह एक औपचारिक आशीर्वाद बन गया क्योंकि एप्रैम और मनश्शे उत्तरी इजराइल राज्य में दो बहुत बड़ी और शक्तिशाली जनजातियाँ बन गईं। तो, आपके पास इजराइल का उत्तरी राज्य है, जहाँ दस जनजातियाँ हैं। और फरि, दक्षिणी इजराइल राज्य में, जैसे यहूदा के नाम से जाना जाता है, आपके पास दो हैं; आपके पास शमोन और यहूदा हैं।

और इस बारे में अध्याय 49 में और अधिक बताया जाएगा। इसलिए, उत्तर में, हम पाते हैं कि एप्रैम इतना शक्तिशाली हो जाता है कि उदाहरण के लिए, भविष्यवक्तियों में, आप वास्तव में इस्राएल के पूरे दस गोत्रों के लिए एप्रैम नाम का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह हमें अंत में छंदों, छंद 21 और उसके बाद की आयतों तक ले आता है।

तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, मैं तो मरने पर हूँ, परन्तु परमेश्वर तेरे संग रहेगा, और तुझे तेरे पतिरों के देश में पहुँचा देगा। और मैं तुझे तेरे भाइयों का प्रधान होने के कारण वह देश देता हूँ, जैसे मैंने अपनी तलवार और धनुष से एमोरियों से छीन लिया था।

अब, भूमि की चोटी शेकेम को संदर्भित करती है, शेकेम के समान ही शब्द। और यहोशू 24, आयत 32, वर्णन करती है कि कैसे एक बार यूसुफ के शव को वापस लाया जाएगा, कि उसे वहीं दफनाया जाएगा। तो, यह कहने के इस नषिकर्ष के साथ, देखो, तुम अब भूमि में नहीं हो।

तुम्हारा परिवार अभी उस देश में नहीं है, लेकिन एक दिन तुम और तुम्हारा परिवार फरि से उस देश में होंगे। यह याकूब के आत्मविश्वास और उसके विश्वास की अभिव्यक्ति है। तो, हम अध्याय 49, श्लोक 1 से 28 तक आते हैं, जहाँ वह अपने 12 बेटों को आशीर्वाद देता है।

और शुरुआती दो आयतों में, हम परिवार को इकट्ठा होते हुए देखते हैं, ताकि इसे प्राप्त कर सकें और सुन सकें, इसलिए हम कहते हैं, मृत्युशय्या पर आशीर्वाद। और पूरे पेटाटेच के संदर्भ में इस बारे में जो बात उल्लेखनीय है, वह यह है कि हमारे पास अध्याय 49 में एक सीम है। और पेटाटेच में तीन सीम हैं जो पहचानने योग्य हैं।

मैं इस बारे में वसितार से नहीं बताऊंगा, लेकिन बस आपको यह बताऊंगा कि अध्याय 49 के अलावा, बाकी दो धागे या जोड़ जहाँ एक साथ जुड़ते हैं,

परमुख आख्यानो का नरिमाण करते हैं, आप कह सकते हैं कि पेंटाटेच के टुकड़े बंधे हुए हैं। व्य वस्था एक आख्यान होगी, उसके बाद कवति, उसके बाद उपसंहार। तो, अब तक हमारे पास यह वसितृत आख्यान है।

अब, यहाँ हमारे पास अध्याय 49 और उसके छंदों में कवति है, और फरि हम एक समापन उपसंहार करने जा रहे हैं जो अध्याय 50, छंद 26 के माध्यम से श्लोक 29 में शुरू होता है। तो, फरि हम उल्लेख करते हैं, और आप इसे अपने आप देख सकते हैं, संख्या 24, श्लोक 14, और फरि व्यवस्थाविरण 31, श्लोक 29। और इसलिए यहाँ भाषा, 49, श्लोक 1, उन दो छंदों में भी पाई जाती है।

इधर-उधर इकट्ठा हो जाओ ताकि मैं तुम्हें बता सकूँ कि आने वाले दिनों में तुम्हारे साथ क्या होगा। आने वाले दिनों में, संख्या 24 और व्यवस्थाविरण 31 में पाया जाने वाला वह कथन बलिकूल सपष्ट है, है न, कि इसका संबंध भवषियसूचक अपेक्षा से है, और फरि उत्पत्ति में भवषिय की दशा की बात करें, और उस मामले में, संपूर्ण पंचगुरन्थ। एक दशा जो वंशजों की ओर है, एक दशा जो भवषिय की भूमि की ओर है, और उस भूमि में आशीर्वाद है।

इसलिए, परमेश्वर कुछ हद तक वादों को साकार करने, उन्हें पूरा करने के लिए काम कर रहा है, क्योंकि जब हम उत्पत्ति में नषिकर्ष नकालते हैं, तो वे अभी भी मसिर में हैं। जब हम व्यवस्थाविरण में पंचगुरन्थ का नषिकर्ष नकालते हैं, तो वे अभी भी कनान की औपचारिक भूमि में नहीं हैं। वे जॉर्डन नदी के पूर्वी किनारे पर हैं, और वे व्यवस्थाविरण के बाद जोशुआ के पहले अध्याय में उस नदी को पार करने और कनान की भूमि में बसने के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं।

अब, मैं चाहता हूँ कि हम यह पहचानें कि यहाँ एक आदेश है जो बच्चों के बारे में बात करता है जैसे वे पैदा हुए थे, उसकी दो पत्नियों से, और साथ ही उनकी दासियों, दासियों से, जिनमें उपपत्नी पत्नियों कहा जाता है, दो पूरी तरह से मान्यता प्राप्त पत्नियों से। इसलिए, वह रूबेन से शुरू करता है, जो लीआ से पैदा हुआ था, और हमें याद है कि अध्याय 35, श्लोक 27 में, रूबेन, यहाँ पानी की तरह अशांत के रूप में वर्णित है, जो आपके पति के बसितर पर चढ़ गया, यानी, उसने, रूबेन ने राहेल की दासी, बलिहा के साथ यौन संबंध बनाए, जो नश्चिति रूप से, अनाचार और वरिध का एक बड़ा कारय है, जो याकूब का अपमान करता है। और फरि शमिोन और लेवी का संदर्भ है, जो लीआ से भी पैदा हुए थे, और यहाँ उनका वर्णन वैसा ही किया गया है जैसा कि उन्हें होना चाहिए, यानी, हसिक पुरुष।

शेकेमियों के खिलाफ हसिा की बात आई , और यह दीना के बलात्कार से संबंधित है, और इसलिए वह पद 7 में उनके करोध को शाप देता है। वह उन्हें याकूब में बखिरता है और उन्हें इसराएल में फैलाता है, इसलिए याकूब और इसराएल यहाँ, इस काव्यात्मक अभवियक्ति में, उसी का उल्लेख करते हैं। अब, जब शमिोन की बात आई, तो वह यहदा के गोत्र द्वारा अवशोषित हो गया, और यह आपके लिए यहोशू 19, पद 1 और 9 में वर्णित है। लेवी को भूमि का एक अलग टुकड़ा नहीं मिला है, लेकिन उसके गोत्र को उनके चरोगार्हों में 48 शहर मिलेंगे, संख्या 35, पद 2 और 7। और इस तरह से, आदरश 12, संख्या 12 को बनाए रखा जाता है, क्योंकि यदा आपके पास एपरैम और आसा भी हैं, तो यह बहुत अधिक होगा, यह 13 गोत्र देगा। इसलिए, संख्या 12 को बनाए रखने का एक तरीका यह पहचानना है कि लेवी को भूमि को एक टुकड़ा नहीं मिला।



इसके बाद, श्लोक 8 में यहूदा है। अब, यहूदा एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि वह राजाओं के महान घराने का पूर्वज बन जाता है, और वह दाऊद के साथ है। और इसलिए यहूदा को एक शक्तिशाली शेर के बच्चे के रूप में संदर्भित किया जाता है, दूसरे शब्दों में, बहुत मजबूत, बहुत आक्रामक।

श्लोक 9 में कहा गया है, वह सहि की तरह दुबककर लेट जाता है, सहिनी की तरह जो उसे जगाने की हमिमत करती है। तो, यह एक बहुत ही मजबूत, अग्रणी व्यक्ति है जो इस्राएल के दुश्मनों को हरा देगा। अब, श्लोक 10 बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें शासक की भाषा का उपयोग किया गया है।

यहूदा से राजदंड कभी दूर नहीं होगा, न ही शासक की लाठी उसके पैरों के बीच से। इसलिए, जब आप दाऊद से कए गए वादे पर जाते हैं, तो इसे दाऊद का वादा, दाऊद की वाचा कहा जाता है। 2 शमूएल अध्याय 7, आयत 13 से 16 में, यह कहा गया है कि दाऊद के घराने का परमेश्वर दवारि चुनाव अंतहीन होगा।

यह शाश्वत होगा। खैर, बेशक, जब आप बाइबल पढ़ते हैं और इस्राएल के इतिहास को पहचानते हैं, तो इस्राएल पर दाऊद के राजा के वास्तविक शासन का अंत होता है, हालाँकि उसकी वंशावली, उसकी वरिसत और उसके वंशज जारी रहते हैं। और विशेष रूप से, हम दाऊद की इस संतान की प्रत्याशा में जानते हैं, कि यीशु की पहचान नए नियम में की गई है, जो मत्ती अध्याय 1 पद 1 से शुरू होती है, कि वह दाऊद का पुत्र और अब्राहम का पुत्र कैसे है, जो कुलपिताओं और राजाओं के इस घराने के लिए परमेश्वर के वादों को एक साथ लाता है।

और इसलिए, यीशु, इस्राएल पर आदर्श राजा बनने के योग्य है। वास्तव में, प्रकाशतिवाक्य अध्याय 5 पद 5 में, मैं इसे आपके लिए पढ़ूंगा। फिर जब यूहन्ना स्वर्ग की ओर देख रहा था, तो एक प्राचीन ने मुझसे कहा, वह सुसमाचार प्रचारक यूहन्ना है, रोओ मत।

देखो, यहूदा के गोत्र का सहि, जो दाऊद की जड़ है, वजियी हुआ है। इसलिए यहाँ हमारे पास प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में यीशु मसीह को यहूदा के सहि के रूप में संदर्भित किया गया है, जैसे हमने अभी इस रूपक में पाया है, श्लोक 9। और फिर वह यहूदा की संतान भी है, जिसकी आशा की जाती है। अब, जब श्लोक 10 और उसके नषिकर्ष की बात आती है, तो यह अनुवाद की थोड़ी समस्या है क्योंकि संस्करणों ने इसका अनुवाद करने के लिए कई तरीके अपनाए हैं।

परंपरागत, यानी कगि जेम्स संस्करण, अध्याय 49 की आयत 10 का इस तरह अनुवाद करता है। राजदंड यहूदा से दूर नहीं होगा, न ही कोई कानून बनाने वाला उसके पैरों के बीच से दूर होगा। अब चुनौती यह है।

जब तक, और यह हबिरू का लपियंतरण है, आप हबिरू का उच्चारण इस तरह करेंगे। जब तक शल्लोह, या शल्लोह, जब तक शल्लोह न आए, और उसके पास लोगों का जमावड़ा न हो। तो, यहाँ शल्लोह या तो किसी व्यक्ति या किसी स्थान को संदर्भित करता है, और शल्लोह वह स्थान बन जाता है जहाँ तम्बू स्थिति है।

और इसराइल के भविष्य में इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होगी। एक और तरीका जिससे इसकी व्याख्या की जाएगी, और मैं जल्दी से उल्लेख कर सकता हूँ, वह यह है कि न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल में भी इसका लपियंतरण है। जब तक शिलोह नहीं आता।

तो, कगि जेम्स वर्शन, न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल। इसमें एक और व्याख्या है, और हबिरू में थोड़ा बदलाव है। इसे इसे तरह से पढ़ा जा सकता है जैसा कि हिम इसे इंग्लिश स्टैंडर्ड वर्शन और न्यू रविइज्ड स्टैंडर्ड वर्शन, इन दो संस्करणों में पाते हैं।

यह इस प्रकार लिखा है। राजदण्ड यहूदा से दूर नहीं होगा, न ही शासक की लाठी उसके पैरों के बीच से, जब तक काँकर न मलि जाए। यह लूट होगी।

यह यहूदा और पूरे इसराएल के शत्रुओं पर वजिय का प्रमाण होगा। जब तक कि उसे कर न मलि जाए, और लोग उसकी आज्ञा का पालन न करें। मैं इंग्लिश स्टैंडर्ड वर्शन पढ़ रहा हूँ।

अब, यह वास्तव में फटि बैठता है, और मुझे लगता है कि इसे शरद्धांजलि के रूप में लेने के लिए एक मजबूत तर्क है, यह देखते हुए कि समानांतरता के दूसरे भाग में, यह उन लोगों की आज्ञाकारिता की बात करता है, जो स्पष्ट रूप से वशीभूत हो रहे हैं और इस महान राजा के प्रति समर्पण व्यक्त किया है जिसने उन्हें अभिभूत कर दिया है। और इसलिए, वे शरद्धांजलि देकर जवाब देते हैं। वे समर्पण के कार्य के रूप में अपने संसाधनों को देकर जवाब देते हैं।

तो यह बहुत ही समझदारी भरा है और हो सकता है कि ऐसा ही हो। हालाँकि आपके ज्यादातर संस्करण, श्लोक 10 को अलग-अलग तरीके से व्यक्त करेंगे। और इसलिए, चूंकि मैं न्यू इंटरनेशनल संस्करण से पढ़ रहा हूँ, इसमें ध्यान दें, इसमें लिखा है, राजदंड यहूदा से दूर नहीं होगा, न ही शासक की छड़ी उसके पैरों के बीच से, जब तक काँवेह, यह एक व्यक्त होगा, जिसके लिए यह, वह सी राजदंड और शासक की छड़ी का संदर्भ होगा, जिसके पास यह है, वह आएगा।

तो, यह एक व्यक्त को संदर्भित करेगा, और इसका संदर्भ तब होगा, शरद्धांजलि के लिए नहीं, शिलोह के लिए नहीं, बल्कि जो हम पहले क्वति में पाते हैं, उसके पूर्ववर्ती के लिए। यह, राजदंड, कसिका है। अब, आप उन संस्करणों में अनुवाद पाएंगे जिनका मैं यहाँ उल्लेख करूँगा।

न्यू लविगि ट्रांसलेशन। और साथ ही, आप इसे मानक बाइबल, करश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल, सौएसबी में भी पाएंगे। और यही वह है जिसकी ओर मेरा झुकाव है।

मुझे नहीं लगता कि हिम नश्चिति रूप से कुछ कह सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि जब तक वह व्यक्त नहीं आ जाता, जिसके पास यह है, तब तक इसका संदर्भ राजदंड से होगा, राष्ट्रों की प्रतिक्रिया के कारण उसके शासन का अधिकार। फिर, यह उस भाषा की बात करता है जो यहूदा और राजाओं के इस घराने के लिए समृद्धि का वर्णन करती है। और इसीलिए यह बेल, शाखा, अंगूर, शराब और दूध के बारे में बात करता है।

भूमि के ये उत्पाद, लेकिन दूध के साथ झुंड के भी। जबलून और इससाकार के बाद, हम दान पर आते हैं। और फिर श्लोक 18 में एक वरिम है जहाँ याकूब एक त्वरति प्रार्थना करता है।

हे परभू, मैं तेरे उद्धार की आशा करता हूँ। फिर हम गाद और आशोर, नप्ताली की ओर बढ़ते हैं। फिर हम पद 22 में दूसरे प्रमुख व्यक्ति, यूसुफ के पास आते हैं।

यूसुफ एक फलदार बेल है। अब जबकि विह पछिले अध्याय के प्रकाश में यूसुफ के बारे में बात कर रहा है, बेशक, हमारे मन में मनश्शे और एप्रैम है। यूसुफ एक फलदार बेल है, एक झरने के पास एक फलदार बेल।

और यह, जाहरि है, इस बारे में बात करेगा कि कैसे बेल को पानी और उनकी वृद्धि से पोषित किया जाएगा। और इसलिए, जिसकी शाखाएँ दीवार पर चढ़ जाती हैं। लेकिन उसे पर हमला किया जाता है।

फिर भी, वह मजबूत है। हमें बताया गया है कि विह इस हमले पर वजिय प्राप्त करता है, अपने हाथों से नहीं। श्लोक 24 में, याकूब के पराक्रमी के कारण, चरवाहे के कारण, इस्राएल की चट्टान के कारण, तुम्हारे पति के परमेश्वर, याकूब के कारण।

यह व्यक्तिगत वाचा संबंध की बात करता है। यह बताता है कि कैसे यूसुफ और उसके भाई याकूब के वंशज हैं और परमेश्वर के वादों, सुरक्षाओं और प्रावधानों के प्राप्त करता है। इसलिए, श्लोक 25 में लिखा है, तुम्हारे पति के परमेश्वर के कारण जो तुम्हारी सहायता करता है, सर्वशक्तिमान शब्द के कारण।

शब्दाई कुलपतिओं को दिया गया विशेष नाम है क्योंकि वे ईश्वर को एल शब्दाई के नाम से पुकारते हैं। अध्याय 17 में, अध्याय 15 में एल शब्दाई का बहुत महत्वपूर्ण उल्लेख है क्योंकि ईश्वर ने खुद को अब्राहम के सामने प्रकट किया था। तो, अब हम नषिकर्ष पर पहुँचते हैं।

तो, हमारे पास राहेल से पैदा हुए यूसुफ हैं। हमारे पास पद 27 में बनियामीन है। और फिर पद 28 में नषिकर्ष है।

शायद मुझे थोड़ा पीछे जाना चाहिए और श्लोक 26 को पढ़ना चाहिए ताकि हम समझ सकें। तुम्हारे पति के आशीर्वाद प्राचीन पहाड़ों के आशीर्वाद से भी अधिक हैं। बेशक, पहाड़ और फिर सदियों पुरानी पहाड़ियाँ, उनकी दीर्घायु, उनकी स्थिरता, सभी वादे, आशीर्वाद जो किए गए हैं, और कैसे दीर्घायु होगी, कैसे उन्हें स्थानांतरित नहीं किया जाएगा, कैसे उन्हें हटाया नहीं जा सकता, कैसे उन्हें चुराया नहीं जा सकता।

तो ये सब यूसुफ के सरि पर, ये सारी आशीषें, राजकुमार के माथे पर टिकी रहें। यह यूसुफ को उसके भाइयों में से एक बताता है। अब, जब यहाँ राजकुमार का जिक्र होता है, तो कोई कह सकता है, ठीक है, तो यह यहूदा के आशीर्वाद के साथ वरिधाभासी है।

उसे राजदंड मलिना चाहिए। उसे राजा बनना चाहिए। यहाँ यूसुफ को राजकुमार कहा गया है।

लेकिन देखिए, वह मसिर में नेतृत्व, मुखियापन की स्थिति लेता है। लेकिन जब कनान की बात आती है, तो यह कनान, इस्राएल में रहने वाले यहूदा के घराने होंगे, जहाँ दाऊद से कए गए वादों को प्राथमिकता दी जाएगी। और मैं आपके लिए यह स्पष्ट करना चाहता था।

तो अब वह एक भव्य नषिकर्ष पर पहुँचता है। और नश्चिती रूप से इससे कुछ सीखा जा सकता है। ये सभी इस्राएल के 12 गोत्र हैं।

यही बात उनके पिता ने उनसे कही थी जब उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दिया, और प्रत्येक आशीर्वाद को उनके लिए उपयुक्त बताया। पहली बात जो मैं कहना चाहूँगा, और यह महत्वपूर्ण है, वह यह है कि सभी जनजातियों को आशीर्वाद दिया गया है। उत्पत्ती के साथ-साथ पेट्रीट्यूक में एकता को बढ़ावा दिया गया है, जो कि इस्राएल के लोगों, इस्राएल की जनजातियों, प्राप्तकर्ताओं की एकता है।

ये सभी अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशज हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है। कोई भी छूटा नहीं है।

और फरि, बेशक, यह आशीर्वाद शब्द का उपयोग करता है, प्रत्येक को उसके लिए उपयुक्त आशीर्वाद देता है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक जनजात के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों के अनुसार। और यह इस बात का अनुमान लगा रहा है कि भूमिका वितरण किस तरह होगा, जो विशेष रूप से यहोशू की पुस्तक में पाया जाता है।

अब, मेरे लिए दलिचस्प बात यह है कि हिमें श्लोक 28 में जो अनुवाद मलित है, वह नया अंतरराष्ट्रीय संस्करण है, क्योंकि हब्रू में जो कहा गया है, उसका स्पष्ट और शाब्दिक अनुवाद हमें नहीं मलित है। और अगर मैं आपको पूरा हब्रू शब्द दे दूँ, तो आप पाएँगे कि धन्य शब्द तीन बार आता है, न कि दो बार जैसा कि आप इसे नए अंतरराष्ट्रीय संस्करण में पाते हैं। और अंग्रेजी मानक संस्करण हब्रू के ज़्यादा करीब है।

और तुम पाओगे कि आशीर्वाद तीन बार आता है। तो, मैं इसे पढ़ूँगा। ये सभी इस्राएल के बारह गोत्र हैं।

उनके पिता ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए यही कहा था। यह एक है। वह हर एक को आशीर्वाद दे रहे हैं।

यह दो आशीर्वाद हैं जो उसके लिए उपयुक्त हैं। तो यह तीन आशीर्वाद हैं।

अगर मुझे न्यू इंटरनेशनल वर्शन पर आगे बढ़ना होता तो मैं इसका अनुवाद इस तरह करता। उसने उन्हें आशीर्वाद दिया। यह एक है।

प्रत्येक को उसके लिए उपयुक्त आशीर्वाद देना। तो यह दो हो गए। और फरि हब्रू इस तरह से समाप्त होता है।

उसने उन्हें आशीर्वाद दिया। उसने पहले उन्हें आशीर्वाद दिया। प्रत्येक को उसके लिए उपयुक्त आशीर्वाद दिया।

उसने उन्हें आशीर्वाद दिया। इसलिए, मैं इसके महत्व को स्पष्ट रूप से सामने लाना चाहता था। अब हम अध्याय 49 की आयत 29 से लेकर अध्याय 50 की आयत 14 तक याकूब की मृत्यु और दफन की ओर आते हैं।

और इसलिए बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे पास परिवार के दफन स्थल का उल्लेख है, जहाँ याकूब यूसुफ और अन्य बेटों को आदेश देता है कि वे उसे वापस मच्छपेला की गुफा में दफना दें, जहाँ अब्राहम ने इसे खरीदा था। अध्याय 23 की आयत 17 से 19 में बताया गया है कि यह गुफा और उसका खेत हतिती एप्रोन से लिया गया था। और वहाँ परिवार को दफनाया गया था। अब्राहम, सारा, इसहाक और रबिका, लआह को दफनाया गया था।

अब राहेल को बेथलेहम में सड़क के किनारे दफनाया गया था। अब अध्याय 50 में याकूब और कैन के दफन का वर्णन है। और सबसे पहले उसका शव-लेपन किया जाता है।

और हमें अध्याय 50 में बताया गया है कि शोक की अवधि है। शव को परिक्रमण करने में 40 दिन लगते हैं; यह श्लोक 2 और 3 में है। और फिर मसिरियों ने उसके लिए 70 दिनों तक शोक मनाया। श्लोक 3 यहीं समाप्त होता है। तो, शोक की अवधि बढ़ा दी गई है।

हो सकता है कि 40 दिन 70 दिनों में ही समाहित हों। हालाँकि, मुद्दा यह है कि एक अनुष्ठान कि शोक था जसिने याकूब को बहुत सम्मान और मान्यता दी। अब यूसुफ फरौन से कहता है, मेरे पिता ने मुझे उसे वापस करने और हमारे परिवार के भूखंड में दफनाने की शपथ लेने के लिए बुलाया है।

और इसलिए, यह वही है जो शेष आयतों में वर्णित है। और जब आप आयत 7 से 11 पढ़ते हैं तो यह काफी धूमधाम और समारोह था। और जहाँ आपके पास दान है, आपके पास विभिन्न अधिकारी हैं, आपके पास आयत 9 में एक घुड़सवार है जिसका उल्लेख किया गया है।

वे अताद नामक स्थान पर आते हैं, हमें ठीक से नहीं पता कि वह कहाँ है, सविय इसके किविह जॉर्डन के पास है। वहाँ जोरदार मातम मनाया जाता है, शोक का दौर चलता है। और जब पड़ोस के कनानियों ने यह धूमधाम और समारोह देखा, तो वे इससे बहुत प्रभावित हुए।

इसलिए, वे श्लोक 11 में टपिपणी करते हैं, मसिरवासी शोक का एक गंभीर समारोह मना रहे हैं। यही कारण है कि जॉर्डन के पास इस स्थान को मसिर का शोक मनाने वाला एबेल मतिजरायम कहा जाता है। अब, मुझे लगता है कि इसका उद्देश्य यह है कि यदि आप याद रखें कि अब्राहम के वादे के माध्यम से, परमेश्वर का इरादा इस्राएल को एक प्रमुख स्थान पर लाना है जहाँ इसका राष्ट्रों पर प्रभाव हो सकता है।

और इसलिए, यह वही है जो स्थानीय कनानियों द्वारा याकूब की प्रमुखता को मान्यता देने से घटित होने जा रहा है, लेकिन दूर के मसिरियों द्वारा भी, निकट और दूर के लोगों द्वारा। और इसलिए यहाँ हमारे पास मसिर के दासों के लिए बहुत महत्वपूर्ण बात है, कि उनके इतिहास में एक समय था जब मसिर हमारे पिता याकूब का सम्मान करता था। और यह फिर से हो सकता है।

यदि परमेश्वर ने एक बार ऐसा किया है, तो वह इसे फिर से कर सकता है। और अब हम यूसुफ के अंतिम दिनों में आते हैं। यूसुफ अपने भाइयों को आश्वस्त करता है कि याकूब की मृत्यु के बाद, वह एसाव की तरह अपने भाइयों के प्रति द्वेष नहीं रखेगा।

और इसलिए, भाई एक साथ आते हैं और कहते हैं, हमारा क्या होगा? इसलिए वे यूसुफ के पास जाते हैं और यह बताते हैं। हम ठीक से नहीं जानते क्योंकि यह पहले की कहानी में नहीं बताया गया है, लेकिन यही वे याकूब से कहते हैं। तुम्हारे पिता ने मरने से पहले ये निर्देश छोड़े थे।

यही बात तुम्हें यूसुफ से कहनी है। भाइयों को देखो। मैं तुमसे वनिती करता हूँ कि तुम अपने भाइयों के पापों और गलतियों को माफ कर दो जो उन्होंने तुम्हारे साथ इतना बुरा व्यवहार करके की है।

अब, कृपया अपने पिता के परमेश्वर के सेवकों के पापों को क्षमा करें। तो, वे जो कर रहे हैं, वह निश्चिंता रूप से, याकूब के नाम और उसके अनुरोध का उपयोग कर रहे हैं। और अगर याकूब यह अनुरोध करती है तो यूसुफ अपने भाइयों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करेगा।

यूसुफ की प्रतिक्रिया यह थी कि वह रोया। उसका रोना एक शोक था, एक विलाप था क्योंकि उसके और उसके भाइयों के बीच जो रिश्ता फिर से स्थापित हुआ था, वह उनकी नज़र में संदिग्ध था। और उसके भाइयों ने वास्तव में झुककर स्वीकार किया कि वे दास थे।

देखिए, वे अपनी जान की भीख मांग रहे हैं और वे मानते हैं कि वे भाइयों जैसा व्यवहार पाने के लायक नहीं हैं। और इसलिए, मुझे लगता है कि डर से बाहर निकलने का एक तरीका है, लेकिन साथ ही स्वीकारोक्ति और पश्चाताप भी। वे झुकते हैं।

आपको याद होगा कि यह वही बात है जो हम अध्याय 37, श्लोक 7 और 9 में यूसुफ द्वारा यूसुफ के परिवार को दिखाए गए सपनों में पाते हैं, जिसमें यह अनुमान लगाया गया था कि परिवार यूसुफ के अधीन रहेगा। यही वह अवसर था जिसके कारण इन भाइयों ने अपने भाई से नफरत की और उसे गुलामी में बेच दिया। लेकिन यहाँ हम यूसुफ को यह कहते हुए पाते हैं कि यह परमेश्वर का काम है।

क्या मैं परमेश्वर के स्थान पर हूँ? तुमने मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा किया, लेकिन परमेश्वर ने इसे भलाई के लिए किया। अब यहाँ हमारे पास जो किया जा रहा है, उसे पूरा करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, कई लोगों की जान बचाना। यह अध्याय 45, श्लोक 7-8 है, जहाँ यह मेल-मिलाप और फिर, उस संदर्भ में, परिवार और उससे आगे सभी राष्ट्रों के लिए प्रावधान किया गया है।

और इसलिए, वह 110 साल की उम्र में मर जाता है। अब आयत 24 में, यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, मैं मरने वाला हूँ। लेकिन, इतना महत्वपूर्ण, परमेश्वर निश्चिंता रूप से तुम्हारी सहायता के लिए आएगा और तुम्हें इस देश से उस देश में ले जाएगा जिसका वादा उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ लेकर किया था।

इसलिए, उसने यह सब आगे बढ़ाया है। और यूसुफ ने इस्राएल के बेटों को शपथ दलाई। परमेश्वर निश्चिंता रूप से तुम्हारी सहायता के लिए आएगा।

और फरि तुमहें मेरी हड्डियों को इस जगह से ऊपर ले जाना होगा। और यही बात नरिगमन 13, श्लोक 9 में भी हुई। और फरि यहोशू 24, श्लोक 32 में भी। तो, वह 110 साल की उम्र में मर गया, और उसके शव को सुगन्धति करने के बाद, उसे मसिर में एक ताबूत में रखा गया।

तो, आप देख सकते हैं कि कैसे उत्पत्ति आपको नरिगमन की पुस्तक के पन्नों को पलटने के लिए कह रही है, जहाँ मसिर में 12 जनजातियाँ और यूसुफ का संदर्भ दिया गया है। और फरि वहाँ दासता है जो इसलिए होती है क्योंकि, बहुत बाद के समय में, मसिर में एक राजा था जो हबिर लोगों को गुलाम बनाता था। परमेश्वर एक ऐसे लोगों को खड़ा कर रहा है जो उसके और सभी राष्ट्रों के बीच मध्यस्थ होंगे।

हमने इसे विशेष रूप से यूसुफ में देखा, जो परमेश्वर और राष्ट्रों के लिए उसके द्वारा कएि गए प्रावधान के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। हमारे अध्ययन के निष्कर्ष में, मैं चाहता हूँ कि हम यह याद रखें कि अब्राहम, इसहाक और याकूब से, और फरि याकूब के बेटे यहूदा से, यीशु मसीह का उदय होता है, जो आदरश, परंपूरण, आज्ञाकारी इस्राएल का अवतार है। और वह वही है जो वह पूरा करेगा और साकार करेगा जो केवल कुलपतियों और इस्राएल राष्ट्र के लिए पक्षपातपूर्ण था।

वह एक पैकेज व्यवस्था की तरह, सभी राष्ट्रों के लिए सभी वादे लाएगा, जिसमें वे लोग भी शामिल हैं जो पश्चाताप में झुकेँगे और यीशु मसीह में परमेश्वर ने जो कयिा है उसकी आराधना करेंगे, जो इतने समय पहले उस क्रूस पर मर गए थे। और उस क्रूस पर एक वकिलप के रूप में, एक बलदान के रूप में, अपने लोगों के पापों के लिए, आपके पापों और मेरे पापों के लिए, यदि हम पश्चाताप करेंगे और उस आशीर्वाद को प्राप्त करेंगे, मृतकों में से आए, और वह शक्तिशाली, शासक परमेश्वर, सभी पर परमेश्वर का पुत्र है। पॉल ने यह तीमुथयिस को लिखा, क्योंकि एक ही परमेश्वर है और परमेश्वर और मानवजाति के बीच एक ही मध्यस्थ है, मनुष्य, मसीह यीशु।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज हैं जो उत्पत्ति की पुस्तक पर अपना शक्तिषण दे रहे हैं। यह सत्र 25 है, याकूब का आशीर्वाद, यूसुफ के पुत्र और याकूब और यूसुफ की मृत्यु, उत्पत्ति 48-50।